हाईस्कूल स्तर पर छात्राओं हेतु शासन द्वारा क्रियान्वित योजनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन

Smt. Neelima Gupta (Assistant Professor) **Dr. Tapesh Chandra Gupta**

Disha College of Management Studies, Raipur (C.G) *J.Y. Govt.Chhattisgarh P/G College, RAIPUR (CG)*

Abstract

बालिका शिक्षा की बदहाल स्थिति से आज कोई भी इंकार नहीं कर सकता। बालिका शिक्षा के समुचित प्रचार प्रसार के लिये जरूरी है कि शिक्षा व्यवस्था में आमूल–चूल बदलाव किये जाये ताकि अधिकाधिक अभिभावक अपनी बच्चियों को स्कूल भेजने के लिये प्रेरित हो और अधिक से अधिक लड़कियाँ स्कूलों के महत्व को आजादी के समय ही समझ लिया था। इसलिये आजादी मिलते ही उसने इस दिशा में प्रयास शुरू कर दिये थे। छात्राओं को शिक्षा का समुचित लाभ प्राप्त हो सके तथा राज्य में शत–प्रतिशत महिला साक्षरता हो, इस विचार से राज्य शासन विभिन्न वर्गो के छात्राओं के हित में विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन के द्वारा समाज को शैक्षणिक संस्थाओं में प्रवेश दिलाने तथा उनके शाला त्यागने की प्रवृत्ति में कमी लाने का प्रयास किया जा रहा है। तथा छात्राओं को अध्ययन की ओर उन्मुख करने हेतु विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। छात्राओं की बहुत बड़ी संख्या अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देती है। छात्राओं के शैक्षणिक स्तर को ऊँचा उठाने हेतु विभिन्न प्रयास किये जा रहे। इन प्रयासों के तहत् कई योजनायें अस्तित्व में आई है। छत्तीसगढ़ राज्य में इन योजनाओं का छात्राओं पर पड़ने वाले प्रभावों को ज्ञात करने हेतु यह अध्ययन किया गया है। इसके तहत देखना यह है कि इन योजनाओं का विभिन्न वर्गो के छात्राओं को कोई लाभ पहुँच रहा है या नहीं। उर्पयुक्त समस्या के समाधान के द्वारा स्त्री शिक्षा के प्रति जाग्रति लाना हैं।नारी पढ़ेगी विकास बढ़ेगी महज नारी ही नहीं अपितु मंथन के बाद निकाला गया परिणाम हैं। शासन द्वारा विभिन्न प्रकार के योजनाओं को लागू करने के पश्चात् उत्तरोत्तर वृद्धि पाई गई है।

भूमिका

वर्तमान युग में समाज के संतुलित विकास क लिये शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। भारतीय समाज विभिन्न वर्गो का एक अदभुत मिश्रण है। विभिन्न वर्गो के विकास में ही राष्ट्र का विकास निहित होता है। विकास के महत्वपूर्ण अंगों में शिक्षा के क्षेत्र का सर्वाधिक ऊंचा स्थान है। शिक्षा समाज के विकास की रीढ़ है। एक ऐसा समाज जो साक्षर हो उसके आर्थिक तथा सामाजिक स्तर में विकास की संभावना अधिक होती है। शिक्षा समाज की अनेक व्याधियों का उन्मूलन कर सकती है। मानव जाति की रक्षा तथा उसकी प्रगति के लिये सबसे बड़ी आशा शिक्षा है। फ्रांस के किसी क्रांतिकारी ने कहां था ''रोटी कपड़ा और मकान के पश्चात् शिक्षा सबसे अधिक मूल आवश्यकता है।''

शिक्षा लोगो को गरीबी के अभिशाप से मुक्त करने में सक्षम होती है। देश की वर्तमान सकल साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है तथा छ.ग. राज्य की साक्षरता दर 71 प्रतिशत है। छ.ग. राजय का साक्षरता दर को ऊँचा करने के लिये शिक्षा के क्षेत्र में राज्य शासन द्वारा अनेक योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। ताकि राज्य की छात्रायें शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ सके। विभिन्न योजनाओं में बालिका शिक्षा के विकास हेतु अनेक प्रयास किये जा रहे है। जैसे निःशुल्क गणवेश योजना, छात्र दुर्घटना बीमा योजना, कक्षा परियोजना, पुस्तकालय योजना, बालिका प्रोत्साहन योजना, सरस्वती योजना, निःशुल्क पाठ्य पुस्तक योजना इत्यादि।

छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में जहाँ आदिवासियों (अनुसूचित जाति, जनजाति) की बुनियाद है वहां पर लोगों की सोच में परिवर्तन लाने का शिक्षा एक सशक्त माध्यम है।

छत्तीसगढ़ जैसे विकासशील प्रदेश में लड़कियों को मिडिल स्कूल की शिक्षा भी नहीं मिल पाती कारण था कि गरीब घर की लड़कियाँ दूसरे गांव में स्थित स्कूल कैसे जाये लेकिन राज्य सरकार की कल्याण कारी नीतियों से गरीब लड़कियों की शिक्षा में अड़चन डाल रही दूरियों को कम करके उनके लिये सरस्वती सायकल योजना लायी जिसने अभिभावकों को भी अपनी लड़कियों की शिक्षा को लेकर गंभीर बना दिया कभी छत्तीसगढ़ को खासकर लड़कियों के मामले में अनपढ़ की संज्ञा दी जाती थी।

सन् 2005 में निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना, सरस्वती सायकल योजना हाईस्कूल में अध्ययनरत् अनुसूचित जन–जाति की छात्राओं के लिये आरंभ की गई थी। उस वर्ष प्रति छात्रा 1800/– रूपये की दर से हाई स्कूल में अध्ययनरत् जनजाति की छात्राओं को शाला के माध्यम से सायकल क्रय करने की सुविधा दी गई थी। तत्पश्चात् उसमें अनुसूचित जाति की छात्राओं को भी जोड़ दिया गया वर्ष 2008 से गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाली छात्राओं को भी इसी योजना के माध्यम से हाईस्कूल की छात्राओं को भी सायकल प्रदान की जा रही हे। इस योजनांतर्गत रायपुर जिले में 172 स्कूलों में सरस्वती सायकल वितरण किया गया है।

निःशुल्क पाठ्य पुस्तक योजना के अंतर्गत वर्ष 2005–06 से कक्षा 9वीं से 10वीं तक के बालिकाओं को निःशुल्क पुस्तके प्रदान की गई है। वर्ष 2008–09 से कक्षा 11वीं एवं 12वीं तक अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति एवं समस्त बालिकाओं को पुस्तक योजना के माध्यम से पाठ्य पुस्तक एवं अन्य पुस्तके प्रदान की जा रही योजना के द्वारा बालिकायें जो गरीब वर्ग की है शिक्षा के लिये प्रेरित हो रही है।

अतः हाई स्कूल स्तर पर शासन द्वारा छात्राओं को जो योजनायें प्रदान की जा रही है उससे बालिका शिक्षा में वृद्धि दर का क्या प्रतिशत है उनकी संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर महिला शिक्षा का अलख जगाना है ताकि महिला साक्षरता दर में वृद्धि अधिक से अधिक हो जिससे परिवार समाज एवं राष्ट्र की उन्नति असीम प्रगति का स्वप्न साकार हो सकें।

अनुसंधान क्रियाविधि (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध पत्र में सर्वेक्षण विधि (Survey Method) का उपयोग किया गया है।

Selection of sampling :- रायपुर शहर के धरसीवां विकासखण्ड के पांच शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक शाला का चयन किया गया है प्रत्येक विद्यालय के 14 एवं 15 वर्ष के 30–30 विद्यार्थियों का चयन किया गया है कुल 150 छात्राओं का चयन किया है।

अनुसंधान उपकरण (Research Instrument)

आंकड़ों को एकत्रित करने हेतु स्व–निर्मित प्रश्नावली प्रपत्र का निर्माण किया गया तथा उसे प्रमाणीकृत कर उसका उपयोग किया गया है। इस प्रश्नावली पपत्र में सरस्वती सायकल योजना'' से संबंधित 23 प्रश्नों का निर्माण किया गया है तथा पाठ्य पुस्तक योजना से संबंधित 20 प्रश्नों को निर्मित किया गया है जो कि इस योजनाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिये प्रर्याप्त है। प्रश्नावली प्रपत्र का प्रशासन कक्षा में प्रवेशकर छात्राओं को दिया गया। प्रश्नावली प्रपत्र के प्रश्नों के उत्तर हां या नहीं में दिये गये हैं। जिसे सही के निशान के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। हाँ में जवाब देने पर 1 नंबर तथा नहीं में जवाब देने पर 0 अंक प्रदान किये गये। समंको को सारणीयन कर प्रतिशत के माध्यम से गणना कर निष्कर्षो को प्राप्त किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical analysis)

अनुसंधान प्रक्रिया में चयनित प्रतिदर्शो के द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया और सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया प्रदत्तों द्वारा प्राप्त आंकड़ों का योग कर प्रतिशत निकाला गया।

सारणी क्रमांक – 1

सरस्वती सायकल योजना

(छात्राओं द्वारा भरी गई प्रपत्र)

क्रमांक	छात्राओं की संख्या	प्राप्तांक		प्रतिशत	
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
1	150	1950	0	100 प्रतिशत	0 प्रतिशत

विश्लेषण

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि छात्राओं द्वारा भरवाई गई समस्या से संबंधित प्रश्नावली प्रपत्र से प्राप्त उत्तर 100 प्रतिशत जाँ में प्राप्त हुये है। अतः स्पष्ट होता है कि छात्राओं द्वारा भरवाई गई प्रश्नावली प्रपत्र से समस्या की पुष्टि हो रही है।

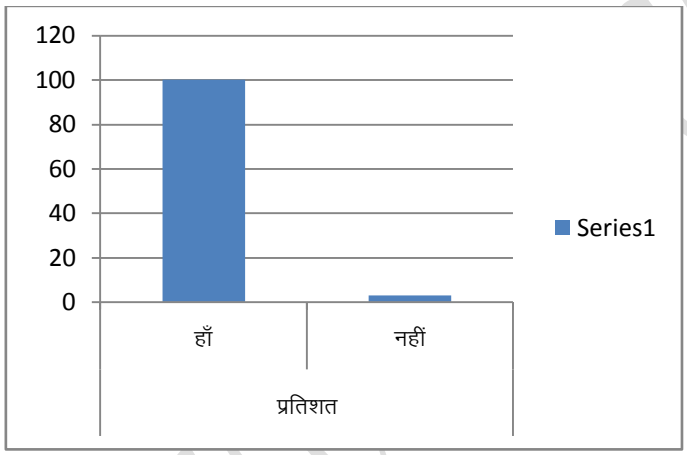

सारिणी क्रमांक–2

निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना

(छात्राओं द्वारा भरी गई प्रपत्र)

क्रमांक	छात्राओं की संख्या	प्राप्तांक		प्रतिशत	
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
1	150	1200	300	80 प्रतिशत	20 प्रतिशत

विश्लेषण

परन्तु तालिका से स्पष्ट है कि छात्राओं द्वारा भरवाई गई समस्या से संबंधित प्रश्नावली प्रपत्र से प्राप्त उत्तर 80 प्रतिशत हाँ में प्राप्त हुये है। अतः स्पष्ट होता है कि छात्राओं द्वारा भरवाई गई प्रश्नावली प्रपत्र से समस्या की पुष्टि हो रही है।

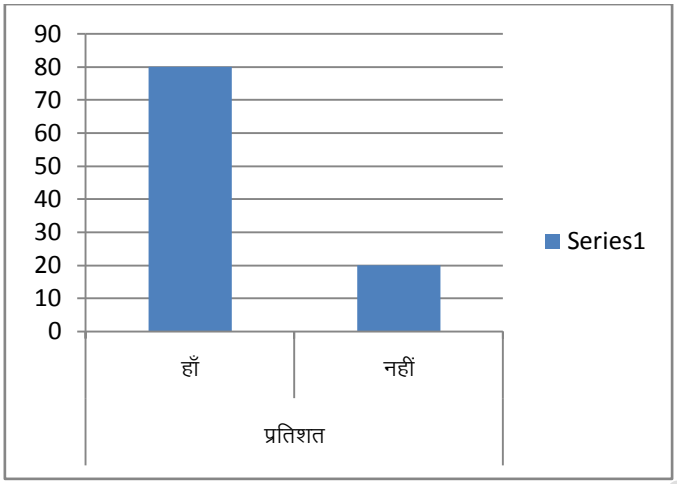

व्याख्या :

1. सरस्वती सायकल वितरण योजना से बालिकाओं की उपस्थिति दर में वृद्धि हुई है। इस योजना के लागू होने से शाला में 5 से 8 कि.मी. की दूरी से आने वाली छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है।
2. कई ग्रामीण अंचलों में हाईस्कूल की सुविधा उपलब्ध नहीं है ऐसी परिस्थिति में यह योजना कारगर साबित हो रही है।
3. सरस्वती सायकल योजना से बालिकाओं के समय में बचत होती है।
4. सरस्वती सायकल योजना से माता–पिता अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने के लिये प्रेरित हो रहे है।
5. निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आया है।
6. निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना से शाला त्यागी छात्राओं की संख्या में कमी आई है।
7. निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना बालिकाओं को आत्म निर्भर एवं व्यक्तिगत विकास करने में सहायक सिद्ध हुई है।
8. निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना शिक्षा के उत्थान एवं समाज के विकास में सहायक सिद्ध हुई है।
9. निःशुल्क पाठ्य पुस्तक योजना द्वारा 95 प्रतिशत परिवार बालिकाओं को शिक्षा देने के लिये प्रेरित हो रहे है।

सुझाव (Suggation)

इस योजना का लाभ अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एव ंबी.पी.एल कार्डधारी बालिकाओं के अतिरिक्त उच्च शैक्षणिक योग्यता वाली छात्राओं को भी मिलना चाहिये। इन योजनाओं के तहत संस्था में जो परेशानियाँ होती है उसे प्राचार्यो एवं शिक्षकों को मिलकर दूर करना चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. अग्रवाल बी.बी.(200) आधुनिक भारतीय शिक्षा और समस्यायें , विनोद पुस्तक मंदिर आगरा ?
2. आचार्य हेमेन्द्र (2002–2003): प्राथमिक विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन का स्वरूप एवं उससे विद्यार्थियों की दर्ज संख्या पर पड़ने वाले प्रभावों का समीक्षात्मक अध्ययन, लघुशोध पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग)
3. उपलवार मुक्ति (1996–97): बालाघाट जिले की आदिवासी तहसील–बैहर में बालिका शिक्षा की प्रगति एवं समस्या का अध्ययन लघु शोध पं. रिवशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर।
4. कपिल एच.के. (2010) अनुसंधान विधियाँ एच.पी.भार्गव बुक हाऊस आगरा।
5. कौशिक एन.पी.श्रीवास्तव (2009): हमारा संकल्प, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर।
6. चन्द्राकर मृदुल (2004–05) बालिका शिक्षा की आवश्यकता एवं इसके बालकों की अभिवृत्तियों का अध्ययन लघु शोध पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर।